

रजिस्ट्रेशन संख्या :- R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :- के पी सिटी- 67 / 2018-20

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा-विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

पत्र व्यवहार हेतु पता :-
सम्पादक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127 / 204 'एस' जूही,
कानपुर-208014

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

वर्ष-42 • अंक - 24 • कानपुर 16 से 31 दिसम्बर, 2020 • प्रधान सम्पादक - डा० एम० एच० इदरीसी • वार्षिक मूल्य - ₹100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को बढ़ावा देने की है ज़रूरत - राज्यपाल

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा के सकारात्मक परिणामों का हो व्यापक प्रसार

कोविड 19 इलेक्ट्रो होम्योपैथी वेबिनार सम्पन्न

राजस्थान इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद द्वारा शीर्षक कोविड-19 से बचाव, जागरण एवं उपचार हेतु आयोजित इलेक्ट्रो होम्योपैथी वेबिनार को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के राज्यपाल माननीय श्री कलराज मिश्र ने कहा कि वर्तमान समय में इस प्रकार के वेबिनार आयोजित करना बहुत उपयोगी है, राज्यपाल ने कहा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक हर्बल चिकित्सा पद्धति है इस पद्धति से बचाव, जागरण एवं उपचार के लिए किए गये कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों द्वारा इम्युनिटी बढ़ाने के लिए हजारों लोगों पर किया गया अध्ययन भी इस पद्धति के विकास में जहां सहायक सिद्ध होगा वहीं इस रोग से लड़ने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे, उन्होंने अपने सम्बोधन में यह भी कहा कि राज्य एवं केन्द्र सरकार इस पद्धति के विकास में सहयोगी बने ऐसा प्रयत्न सभी को करना होगा।

मया है, जयपुर के सांसद श्री रामचरण बोहरा ने बताया कि इस पद्धति की आवश्यकता इस लिए भी है कि हमको सरल सस्ती एवं सुरक्षित चिकित्सा

परिषद के जिला सचिव डा० लक्ष्मण सिंह राठीर ने जानकारी दी कि कोरोना से बचाव हेतु इम्युनिटी बढ़ाने वाली दो दवाईयां रक्रोफोलोसो-वन

26396 व्यक्तियों को पिलाई गयी जिनमें मात्र दो व्यक्तियों को कोरोना हुआ एवं 60-65 व्यक्तियों को साधारण सर्दी जुकाम एवं अन्य सन्धी व्यक्ति

होम्योपैथी परिषद के अध्यक्ष डा० हेमन्त सेठिया ने बताया कि लगभग 400 से अधिक रोगियों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी दवाओं के उपचार के माध्यम से कोरोना पॉजिटिव से कोरोना नेगेटिव किया गया है, यह अपने आप में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में एक मील का पत्थर है जो भविष्य की सम्भावनाओं के लिये का एक अच्छा संकेत है।

श्री जितेन्द्र खण्डेवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम में जयपुर ग्रामीण से सांसद कर्नल राजकुर्वन सिंह राठीर, सांसद भागीरथ चौधरी, सांसद देव जी पटेल एवं मरतपुर के सांसद रंजीता कोली तथा प्रताप भानु सिंह शेखावत ने भाग लिया। कार्यक्रम में नेपाल, दुबई, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा के इलेक्ट्रो होम्योपैथ चिकित्सकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया, संचालन स्वेता जैन एवं आमार सचिव डा० गोविन्द लाल सेनी द्वारा व्यक्त किया गया।



राजस्थान इलेक्ट्रो होम्योपैथिक परिषद द्वारा आयोजित COVID-19 और इलेक्ट्रो होम्योपैथी वेबिनार को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र

गांवों-गांवों तक पहुंचानी है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा

(S-1) एवं वर्मिफ्यूगो-वन (Ver-1) औषधि राज्य भर में

स्वस्थ एवं कोरोना से मुक्त हैं। राजस्थान इलेक्ट्रो



BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE, U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION DECEMBER 2020

Name of the course	29 th December, 2020 Tuesday	30 th December, 2020 Wednesday	31 st December, 2020 Thursday
F.M.E.H. 1st Semester	Anatomy & Physiology	Pharmacy & Philosophy	XX
F.M.E.H. 2nd Semester	Pathology	Hygiene & Health	Environmental Science
F.M.E.H. 3rd Semester	Ophthalmology including E.N.T.	M.Jurisprudence & Toxicology	Dietetics
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	Materia Medica	Practice of Medicine

Timing → 9:00 A.M. to 12:00 A.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge



COVID-19 और इलेक्ट्रो होम्योपैथी वेबिनार में कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय केन्द्रीय संसदीय कार्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल

अहितकारी है बी०ई०एम०एस०



इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में बी०ई०एम०एस० की उपाधि, शीर्षक अथवा अलंकरण अपनी उत्पत्ति से ही विवादित रही है जहां इस पर पहली बार माननीय उच्च न्यायालय द्वारा टिप्पणी की गयी और टिप्पणी भी ऐसी कि पूर्व में जारी की गयी तथाकथित उपाधि, शीर्षक / अलंकरण को शून्यतः मिली नहीं माननीय उच्च न्यायालय द्वारा जारी आदेश के अनुपालन में जारी आदेश में स्पष्ट तौर पर **Bachelor** शब्द को निषेध किया गया, इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि डॉक्टर (Dr.) शब्द न लिखने की संस्तुति विशेषज्ञ समिति द्वारा की गयी है जिसके परिणाम स्वरूप भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (अनुसंधान पटल) द्वारा आदेश जारी करते हुये सभी राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ्य सचिवों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सचिव, डेन्टल काउन्सिल ऑफ इण्डिया, इन्डियन नर्सिंग काउन्सिल, मेडिकल काउन्सिल ऑफ इण्डिया, फार्मसी काउन्सिल ऑफ इण्डिया, इन्डियन काउन्सिल ऑफ मेडिकल रिसर्च, भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग के सचिव, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद, केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद, केन्द्रीय आयुर्वेदिक एवं सिद्धा अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय योगा एवं नेचुरोपैथी अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद एवं केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा पद्धति अनुसंधान परिषद को प्रेषित करते हुये आवश्यक कार्यवाही की अपेक्षा की है तथा सभी राज्यों / केन्द्र शासित प्रदेशों को निर्देशित किया है कि उनके राज्य/संघ क्षेत्रों में संचालित कोई भी संस्था **Bachelor and Master** डिग्री कोर्स संचालित न करे और न ही इसके चिकित्सक डॉक्टर (Dr.) शब्द का प्रयोग करे।

भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के इस आदेश का पूरे देश में व्यापक स्तर पर प्रचार किया गया तथा चिकित्सकों के विरुद्ध कार्यवाहियां भी की गयीं, अन्ततः परीक्षण के समय बी०ई०एम०एस० (B.E.M.S.) शब्द का पूर्ण नाम जब-जब पूछा गया तो अलग-अलग शाब्दिक अर्थ के साथ बताये गये जिससे यह उपाधि, शीर्षक/अलंकरण स्वतः प्रमित होती गयी परिणाम यह हुआ कि इसके चिकित्सकों को कोई लाभ तो नहीं मिल सका अपितु उनके द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से किया जा रहा कार्य भी विवादित हो गया, कानूनी दृष्टिकोण से अब यह B.E.M.S. उपाधि धारी चिकित्सक जो यह सोचकर प्रेषित कर रहे थे कि उनकी उपाधि भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से बाकायदा **approved** है एक झटके में स्तब्ध रह गये।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति की मान्यता हेतु भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति के समक्ष संयुक्त प्रयोजल कर्ताओं/संयुक्त संशोधित प्रयोजल कर्ताओं तथा प्रयोजल कर्ताओं के दूसरे समूह द्वारा प्रस्तुत अभिलेखों की प्रारम्भिक सन्नरीक्षा में ही B.E.M.S. उपाधि पर टिप्पणी तथा अन्तरविभागीय समिति द्वारा अनेक बार अपनी बैठकों में भी टिप्पणी की गयी है, ऐसी स्थिति में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति की मान्यता हेतु भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति से B.E.M.S. उपाधि के सम्बन्ध में कोई अपेक्षा कैसे की जा सकती है केवल इतना ही नहीं B.E.M.S. उपाधि के सम्बन्ध में न्यायालयों में अनावश्यक मुकदमों की लगाये जा रहे हैं बहुत सम्भव है कि भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति की टिप्पणियों का संज्ञान लेते हुए माननीय न्यायालय तथा/अथवा सन्दर्भित सरकारें कोई कठोर आदेश B.E.M.S. उपाधि के सम्बन्ध में जारी भी कर सकती हैं, अनावश्यक मुकदमों के बारे में सर्वविदित है कि इससे नुकसान ही होता है, ऐसी स्थिति में B.E.M.S. उपाधि कैसे हितकारी हो सकती है ?

प्रदेश में चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए आवश्यक है कि चिकित्सक, स्नातक/परास्नातक अर्हताधारी हो अब यह अवाश्यक हो जाता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए ऐसी अर्हताएँ हों जिनका स्तर स्नातक से कम न हो इस अर्हता में B.E.M.S. उपाधि कोई स्थान नहीं ले सकती है इस आशय का शासनादेश प्रदेश सरकार द्वारा जारी किया जा चुका है इलेक्ट्रो होम्योपैथिक शीर्ष संस्थाओं को चाहिये कि इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें तथा अनावश्यक विवाद से बचें।

ORIGIN AND DEVELOPMENT OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINES

Continued from last issue

Multiple remedies are essential to cure complex individual (Human/Veterinary) Body's multiple organ tissues with varied Biochemical Constitutions to rebalance its normal status. So the principle of ElectroHomoeopathy is "Complexa Complexis Curantur".

Paracelsus was one of the most important renaissance naturalists. Paracelsus' full name is: Theophrastus Von Hohenheim (1493 - 1541). He put forward the view that human diseases are a result of external Environmental Forces. He also believed that plants and natural substances held the key to healing and embraced, the 'like can cure like' principle. One of his ideas, known as the Doctrine of signatures, was that the appearance of a plant, or the substances it contained, gave an idea of the disorders it could treat. As a youth, Paracelsus worked in the nearby mines as an analyst.

This gave him the background for his future work in Chemistry and Alchemy, that doubtless, laid the foundations of his later remarkable discoveries in the field of Homeopathy and Electro Homoeopathy.

Electro Homoeopathy is the name given to a new system of medicine discovered by a famous Italian Count Cesare Mattei in the latter part of the 18th century. Count Mattei, the founder of Electro Homoeopathy, was born on the 11th January 1809 in Bologna city in Italy. He belongs to one of the noblest families of Bologna, the town of the learned. After having studied natural science, he dedicated himself to understanding **Anatomy, Physiology and Pathology**; then more exclusively to **Chemistry and Botany**. After long and patient research following a method of his own, he discovered **how to extract active ingredients from certain plants**.

C.C. Mattei is even today considered as the father of Electro Homoeopathy. He studied and experimented these techniques and through **Cohobation Method**, produced drugs from these medicinal plants by taking out **Spagyric** essences in most purified way and mixing them in proper proportions. He tried them on many patients and cured their diseases in a very effective

and successful manner. **Count Cesare Mattei believed in the theories of famous Paracelsus**, who introduced similar laws of treatment and cure and was convinced of their immense utility and of their perfectly innocuous character. **Mattei applied these to all his patients with confidence.**

Further, in order to observe closely in innumerable cases of diseases and to study the effect of these remedies, He held his studies in his mansion at Bologna for more than ten years in **Public and Private Consultations**, in the presence of physicians and surgeons who had attached themselves to him for the purpose of being present at the sitting. These sittings included persons of all ages and of all Nations.

Physicians and even large medical bodies. During 1850's the **Philosophy** observed by **Cesare Mattei** and influenced by the **Philosophy of 'Paracelsus'**, Swiss priest and pioneer of chemical medicine, studied natural science and conducted experiments with his modified new method of medicine preparation, **Diagnosis and Treatment** for various diseases. **Mattei's medicines had speedy recovery and were highly effective.**

Due to its quickness of action and Electricals of the plant extracts in re-balancing the abnormal conditions of the body tissue (**Homeostasis**) Cesare Mattei named his method as **Electro** (Electricals) **Homoeo** (Homeostasis) **Pathy** (Treatment). Count Cesare Mattei's "Electro Homoeopathic" remedies gained popularity in Britain in the year 1870s.

In May 1890, the issue of **"The National Review"** not only reflected the growing popularity of "Mattei's cures" in Britain but also became a controversy between the Mattei partisans and the British medical Professionals and Medical Faculties. Mattei wrote his first book in 1874 in Italian

language, which was later translated and published in other languages such as German, French, English, Spanish, etc. He applied his entire lifetime to the discovery of **Materia Medica** capable of modifying not only the manifestation or symptoms of disease, but also their principles to recover the cause of the disease.

He put forth this by means of a simple theory with curative agents which he called **Electricity** in the remedies (**Electro-Homoeopathy**), which was so elementary that everyone may cure himself. His theory of medicine is certainly the medicine of the future. Count Mattei in the early year of 1880 set up **Consortium for Electro Homoeopathy** for the sale and promotion of his remedies in Regensburg.

In 1881, Theodore Krauss joined the **Consortium for Electro Homoeopathy** and remained there in contact with **Count Mattei** till the year 1890. In 1909 Krauss received the title "Professor". In the year 1883 the Consortium was transferred to the **Engel Pharmacy** in Regensburg for selling the remedies.

The Consortium remained responsible for publication of the literature and assistance for these remedies to the 7000 members of the **Electro Homoeopathic practitioners**. In 1887, **Count Mattei** who was aged by then, handed over all his work to his adopted son **Mario Venturoli Mattei**. Count Mattei died on 3rd April 1896 at the magnificent castle of La Rochetta, situated in the heart of the Apennines. But after the death of Mattei in 1896.

Theodore Krauss took over the **Consortiums for Electro Homoeopathy**; later on He expanded the system, together with the Pharmacist Johannes Sonntag he developed from 1917 the so-called **J S O - c o m p l e x - HeilweiseKrauß**, or JSO Spagyrik, a modification of Spagyric and Electro Homoeopathy.

To better distinguish this *Spagirik* is written with an "i". The JSO complex healing method includes 55 pharmaceuticals of plant origin in the dosage form globules and five fluids and ointments. The preparations are produced by fermentation. The Electro Homoeopathic method is described in the *German Homoeopathic Pharmacopoeia* in Regulations 27 to 30. The major fundamental differences of Electro Homoeopathy and Homoeopathy are discussed in the Table 3. (in next issue) During the First World War the supplies from Italy were missing between the years 1914 to 1918. The first original medicines under the license were later produced under the scientific direction of **Krauss and Dr. Johannes** in the same way as the **Mattei method** and his system. The system later established by Theodore Krauss which became known as **Electro Komplex Homoeopathy** and the Principle of Mattei's Electro Homoeopathy is adopted as "*Complexa Complexa Curantur*". After Theodore Krauss' death, his work was taken forward and his first book on Electro Homoeopathy was published as back as in 1920. Since then, the book has gone through 14 editions till date, in Germany. Following that, Spagyric had an official place in Europe and in the *German Pharmacopoeia* Bonqueval published a book "Theory and practice of Electro Homoeopathy" from New York, L.O. Stickel New York and mentioned Electro Homoeopathy as wide spread in India, between the year of 1870 and 1880. In the year 1885, **Dr. Anna of Madras Presidency of British India** became the first Electro Homoeopathy physician and the stockiest and distributor of **Electro Homoeopathic Medicines in India and South Asia**. The major role of popularizing Homoeopathy in South India was played by **Father Augustus Muller (1841-1910)**. Basically Father Muller was a German priest who studied Homeopathy in USA and France. He then went to Mangalore in South India on 31 December, 1871 with other missionaries. By virtue of his zeal, in 1880, a charitable dispensary was founded in Kankanadi, Mangalore.

During that period

ORIGINS AND DEVELOPMENT OF ELECTRO HOMOEOPATHY.....Contd from page 2

Electro Homoeopathy was simultaneously gaining popularity throughout the world as a result of efficacy and speedy remedies of the Electro Homoeopathic Medicines. Dr. Father Augustus Muller went on to establish an Electro Homoeopathic Leprosy Hospital and Asylum in Mangalore, Karnataka, India, in the year 1890. **This is the first record of evidence of introduction of Electro Homoeopathy in India.**

In 1893 Dr. S. Kennedy lectured in India on Mattei's treatment and gave abundant proof of its efficacy in treatment of various diseases. **Dr. Baldeo Prasad Saxena of Lucknow** had been practicing **Electro Homoeopathy since 1895**. He was the First Person to Practice Electro Homoeopathy in Northern India. In the year 1907, he also started a School of Electro Homoeopathy in Lucknow. Significant contribution for promotion and development of Electro Homoeopathy in North India was made by **Dr. N.L. Sinha. Dr. Sinha was born in Lucknow on 30-11-1889** in a reputed family of Kayesthas. Dr. Sinha had a keen interest in medicine. As a hobby he studied various systems of medicine, viz., Allopathic, Ayurveda, Homoeopathy, Naturopathy etc. He came in possession of one book titled as "STEPPING STONE TO ELECTRO HOMOEOPATHY", written by **A. J. L. Gliddon** of London. In the year 1907, Dr. N. L. Sinha got influenced and self motivated by treatment, results of Electro Homoeopathy through sequential publications of many books written by Dr. A.J.L. Gliddon in the title "Stepping Stones to Electro-Homoeopathy."

In the year 1908, he started Electro Homoeopathy Clinic in Sultanpur District (U.P.) He went on to study Electro Homoeopathy and completed his doctorate in Medicine in Electro Homoeopathy from Superior Independent Institute of Applied Medical Sciences, London in 1911. He established Electro Homoeopathic Institute in 1911 at Sitapur. After getting married, he shifted to Kanpur in 1918. Dr. Sinha wrote more than three dozen books on various medical subjects in English, Hindi and Urdu. His book '*Materia Medica and Fundamentals Laws*' is

considered a milestone in the principles and philosophy of Electro Homoeopathy. Dr. Sinha was the first among all the authors who tried to explain the medical system through his book, in a most scientific way. This book has been translated into French and German languages. He then sent various copies of the book to expert Physicians of Electro Homoeopathy in Italy, France and Germany. The book was translated by them into Spanish, Arabic and Urdu and various other languages. In 1919 He formed the Count Mattei Association and this Association in its resolution of 28th December, 1920 established National University of Electro Complex Homoeopathy for education, research and development of Electro Homoeopathy.

For his contributions, Dr. Sinha was awarded certificate of merit by Prof. Theodore Krauss for composition of "Materia Medica" in Urdu poetry on 18th September, 1937, and was also awarded Doctor of Philosophy (Ph.D.) by The National University of Therapeutics, District of Columbia, U.S.A on 8th June, 1938. During the Second World War, the Import of Electro Homoeopathic medicines fell short of supply and the physicians had to face serious trouble in meeting with patients' demands, which in turn affected their practice.

Dr. Sinha started to prepare medicines and serve them to his followers. Meanwhile a revolution for the recognition of Homoeopathy was on the move. Dr. Sinha also appealed to our Late Prime Minister Pt. Jawaharlal Nehru that Electro Homoeopathy can cure all type of diseases and can help the ill people as it is a complete clinical examination like other systems of medicine like Ayurveda, Siddha, Homeopathy and Unani etc..

On this appeal Nehru wrote a letter to the then Chief Minister of U.P. Late Pt. Govind Ballabh Pant to make an enquiry on the efficacy of the Electro Homoeopathy system of treatment. In 1948, Dr. N.L. Sinha started treatment to one patient **Hidayat Ali**, who was suffering from mixed Leprosy for the past 12 years and was admitted in the Hospital for six years. The patient was kept on trial under the treatment of

Dr. N.L. Sinha and to see the efficacy of **Electro Homoeopathy**. Dr. Sinha agreed to take up the treatment for six months with his medicines and at his own cost and started to treat **Hidayat Ali**. It was assured by Government that if the patient fully cured then steps would be taken for its recognition. Pathological investigation was done. The patient was cured cent-percent. But the Government did not take any step in favour of this medical system. Ultimately, Dr. Sinha who was let down by the inaction of the Government informed the then State Government of his decision to resort to hunger strike, from July 1st, 1951, if his demand for the recognition of this system by trials and tests and financial aid to his institution were not met by June 30, 1951.

So, on 4th July, 1951, Director of Medical Health Services, of Uttar Pradesh **A.N. Das** directed the Civil Surgeon of Kanpur vide letter no. XI. F. 17687, to give half a dozen typical cases of Leprosy for treatment to Dr. Sinha for treatment. Since the Government was reluctant to recognize **Electro Homoeopathy** even after the cure of the leprosy patients.

Dr. Sinha started his 'Fast unto Death' which continued for 30 days, during which period, he lost forty-three pounds in weight. This news spread throughout the country and appeals were made by the medical men and general public to give a patient hearing to Dr. Sinha.

After a complete one month's fast, the Government of U.P. promised to give six more cases of leprosy for treatment as a further trial to prove the treatment and on success promised to recognize and adopt the system in Government Hospital. Dr. Sinha broke the fast on this understanding.

The Medical Departments vide its letter No. 1459-v/B-103/1953 dated 27.3.1953 asked Dr. Sinha to get Electro Homoeopathy generally recognized, only then recognition matter would be considered. Dr. Sinha was assured by U.P. Government that the matter would receive a sympathetic attention, till the last moment of his life Dr. N.L. Sinha worked for the development of Electro Homoeopathy and wrote several books on the subject in Hindi, Urdu, and

English and completed the literature for the forthcoming disciples of Electro Homoeopathy.

Finally, **Dr. N.L. Sinha died on 30th August 1979**. In his death, India lost a great disciple, researcher and mentor of **Electro Homoeopathy**.

In the language of Count Ceasre Mattei definition of Electro Homoeopathy is as follows- "*Electrohomoeopathy is perfected homeopathy way, by the discovery of new therapeutic agents acting on the blood and giving an organism the power necessary to cast off the morbid elements which injure it.*"

This *Materia Medica*, like Homeopathy which is the consummation, has been evolved by experiment, and it rests entirely on facts ascertained by experiment; it is therefore true, and it is as simple as truth itself.

He choose the Name "**Electro Homoeopathy**" because he thought that his remedies worked as fast as Electricity due to presence of Electrols / Electrolytes of plant origin, which maintain Homeostasis of the tissues, organs and organ systems of the body by removing the vitiation of blood and lymph. Mattei's healing system was based on the empiricism.

The efficacy of a remedy was the most important aspect, while pathogenic and pharmacological considerations were seen as secondary.

Electro Homoeopathy was not restricted to the functional level of human life, but took into account the essence of life processes, existential drives and the spiritual influences to which all of nature is subjected. He was therefore also interested in the principle of the "**Vital Force**". Mattei also acknowledged Hahnemann's Similarity Principle.

"Experience had taught Mattei that one could only cure a disease that came out in various symptoms by using several substances in combination only. Mattei postulated that the drug proving should be performed on a sick person. He demanded, moreover, to prescribe a remedy in direct relation to the disease with the quantity of the remedy being reciprocal to the severity of the disease; if more diluted, then more frequently it had to be taken.

Contd. on Page 4

PRINCIPLE OF ELECTRO HOMEOPATHIC MEDICINES

There are various methods of preparation and processes of preparation of herbal medicines have been evolved along with the Human evolution with respect to their knowledge technique, observation, experience in diagnosis and treatment. Advancement in any science for the welfare of health is continuous never ending process in the medical research. Each alternative Traditional Medical Practice has its unique Principles. Most of the such alternative systems are not studied well scientifically but have been practicing. In 1839 Homoeopathic method of treatment was introduced in India with its unique principles.

At present Homoeopathic medical treatment is accepted far greater in India than any other country Electro Homoeopathy is much more advanced than the Homeopathy with difference by various modification and found results more nontoxic, highly effectively and highly rapid or speedy recovery than the Homeopathy with its unique principles.

PREPARATIONS OF ELECTRO HOMEOPATHIC MEDICINES

Plants or plant parts are collected in appropriate seasons. Spagyric essences are prepared by these plants or plant parts. The term 'Spagyric' is derived from Greek word spagyry (Spao + ageiro) which means separate and reunites. Electro Homoeopathic spagyric essences are prepared by the following process.

In the first step, the plant material is immersed in water in a container and wormed at a temperature of 30 to 40 degree centigrade. Then the phyto constituents can be extracted in the water. This process needs to repeat by changing required fresh water to yield maximum concentrated essence. This process may require 3 to 30 days depending upon the plant parts used, i.e., fresh leaves, stem bark, seeds, roots etc.. This separated fresh water extract is collected in a separate collecting bottle. This extract is denoted as **A**. After this water extract is prepared, the plant material is distilled in water to separate more phyto constituents such as volatile oils and oils from the plant materials.

This extract is denoted as **B**. After this second step plant material is taken in a separate wide mouthed round bottom flask. The water left from the separation of volatile oils is poured over the plant material in a wide mouthed round bottom flask. The flask is then sealed with fermentation lock and placed in an incubator at 27-35 degree centigrade for two weeks. By that time, the plant material would have fermented and yielded up its spirit. This fermented spirit is also known as Mercury. The spirit is distilled off and rectified for at least seven times. This third extract is denoted as **C**. The remaining plant material is taken for separation of salts from the plant material in the fourth step. In this step, the material is dried to remove all the moisture, by keeping in an oven. When all the moisture is gone, the plant material begins to roast. Then it is incinerated. When the material turns ash grey color, heat is turned off and let to cool. Next step is to grind and weigh the ash and then extract using sohxlet extraction in water and collect in a Petri dish. Water is then evaporated in an oven overnight and salt is collected then. Salt content is weighed and heated in high temperature to obtain hygroscopic salts and collected it in air tight bottle. This extract is denoted as **D**. After extraction, the extracted salt (**D**) is re mixed with the rectified spirit (**C**) and the volatile oils (**B**) and then with water extract (**A**). This mixture is allowed to digest at 30 degree centigrade temperature for a week. This process is known as COHOBATION. Shake the container slightly three to five times per day for a week. This process is known as Digestion. After digestion decant the spagyric essence to remove undissolved salts. This essence is used for further medicinal preparation which is higher in quality and almost zero toxic.

Mattei's method of procedure preparations underwent research with some modifications in the aim of more efficacy by individual EH Practitioners and manufacturers and researchers, Since from the Mattei's innovation, there are many 100's of books published across the world related to Electro Homoeopathy but lack of scientific publications in Scientific journal Publication. But Zimple and Krauss are disciples of the Mattei's were tried to improve the quality of remedies with respect to safety and efficacy with Experiments. Both modified preparation known as Electro Complex Homoeopathy also by Zimple & Theodor Krauss officially recognized and are included in German Homoeopathic Pharmacopeia.

Theodor Krauss quote in German language book title "Zitat von Theodor Krauß: "Komplexes mögedurch Komplexes geheilt werden". From 1881 onwards, Krauss dealt with Cesare Mattei's Electro Homoeopathy. In 1909 Krauss received the title "Professor h.c. for the Chair of Occult and Hermetic Medicine" at the Écolesupérieurelibre.

PLANTS USED IN

ELECTRO HOMEOPATHIC MEDICINES

In Electro Homoeopathic Medicine there are about 114 plant species belonging to 87 families are used in Electro-Homoeopathic System of Medicine, out of which 32 important plants species belonging to 19 families are commonly available in India. Spagyric essences of each plant of Electro Homoeopathic medicines are prepared by the above mentioned procedure. Then these individual essences are re mixed to prepare Electro Homoeopathic medicines in different dilutions and different quantities (proportions) and are used to prepare different Electro Homoeopathic remedies for different diseases based on disease conditions and whether the patient's body temperament is Lymphatic, Sanguine or Mixed Temperament etc. The medicinal plants used in the preparation of Electro Homoeopathic medicines, the family of plants used in different Electro Homoeopathic remedies are listed in Table 1. (To be published in next issue)

Among these, some are used in other alternative medical systems like Ayurveda, Homoeopathy & Unani systems. About 28 plants are used even in Russian recognized medical system phytotherapia.

NAMES OF ELECTROHOMEOPATHY REMEDIES

The remedies which C.C. Mattei prescribed for treatment of patients with different Temperaments were named to describe their "Numerous Properties" for example Scrofoloso or Anti Scrofoloso, Canceroso or Anti-Canceroso etc. Each series of remedies were numbered in "the order in which they were discovered" by the founder C.C. Mattei. For example Scrofoloso-1 (S1) was discovered before Scrofoloso-2 (S2). These remedies were administered as Globules, Liquids and Ointments. List of different medicines used in the Electro Homoeopathic medicine preparation are mentioned in the Table 2.

(To be published in next issue)